Universe Journal of Education & Humanities ISSN 2348-3067
Volume-I, No. I, Feb.-2014, pp. 97-98

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता

डॉ0 सुशील कुमार
शिक्षक,
बेसिक शिक्षा परिषदीय विद्यालय, बुलन्दशहर उ.प्र. भारत।

प्रचलित शिक्षा पद्धति जीवन से दूर है। वर्तमान शिक्षा अच्छे नागरिकों का निर्माण करने में असफल रही है। इसने छात्रों में स्वार्थपरता को जन्म दिया है और सार्वजनिक कार्यों के प्रति उपेक्षा का भाव पैदा किया है। प्रचलित शिक्षा पद्धति ने एक ओर जन शिक्षा की बात की तो दूसरी ओर यह समाज के विशिष्ट वर्ग के लिए भी व्यवस्था करती है। डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के शिक्षा सम्बन्धी विचार आज की परिस्थितियों में बहुत ही प्रासंगिक हैं।

1. शिक्षा का स्वरूप

डॉ0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षा से मानव का व्यक्तित्व सम्पूर्ण, विनम्र और संसार के लिए उपयोगी बनता है। सही शिक्षा से मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और विश्व बंधुता में बढ़ोत्तरी होती है। ये गुण शिक्षा के आधार हैं शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो छात्रों की ज्ञान प्राप्ति की तीव्र जिज्ञासा को शान्त कर सके। शिक्षा का अर्थ है एक जाग्रत समाज की रचना। शिक्षा ज्ञान और बुद्धि के रास्ते से गुजरने वाली एक अनन्त यात्रा है। शिक्षा जीवन मूल्यों पर आधारित और सौद्देश्य होनी चाहिए। शिक्षा का स्वरूप समाज के निर्माण के अनुरूप होना चाहिए। वास्तविक शिक्षा मानवीय गरिमा और व्यक्ति के स्वाभिमान में वृद्धि करती है। जिज्ञासा, सृजनशीलता, प्रौद्योगिकी, उद्यमशीलता और नेतृत्व जैसी पाँच क्षमताओं का विकास शिक्षा प्रक्रिया के माध्यम से किया जाना चाहिए।

2. शैक्षिक उद्देश्य

डॉ0 कलाम के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य रोजगार का सृजन होना चाहिए न कि बेरोजगारों की संख्या बढ़ाना। प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए कि बच्चों की रचना शक्ति की बढ़ोत्तरी। सेकेंडरी शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए बच्चों में ऐसा आत्मविश्वास उत्पन्न करना कि वे अपना स्वयं का कोई छोटा उद्योग खड़ा कर सकें या उच्च शिक्षा और शोध के क्षेत्र में प्रवेश कर सकें। उच्च शिक्षा के संस्थान विश्व स्तरीय होने चाहिए जो उद्योग जगत के साथ मिलकर कार्य करें। इसके साथ साथ डॉ0 अब्दुल कलाम ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा के उद्देश्य एवं महत्व को समझाया है।

3. पाठयक्रम

डॉ0 कलाम लघु–अवधि के व्यवसायिक कोर्सो तथा असमर्थ बच्चों में साहस एवं जोखिम उठाने का विकास करने हेतु मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के पक्ष में है जो उनमें अदम्य साहस का विकास कर सकें। वे सलाह देते हैं कि पाठयक्रम एवं शिक्षा व्यवस्था को अनुसंधान तकनीकी में विकास, उद्योगों, सृजनात्मकता का विकास और नवाचार, उद्यमशीलता और प्रबन्धन आदि में बढ़ावा देना चाहिए। डॉ0 कलाम न केवल विज्ञान को पाठयक्रम में अपितु चिकित्सा, नर्सरी, कम्प्यूटर, अभियांत्रिकी, विधि और साहित्य इतिहास व दर्शनशास्त्र के अध्ययन को भी छात्रों के पाठयक्रम में शामिल करना चाहते हैं। उन्होंने माना है कि पाठयक्रम को हमारी तकनीकियों, सामाजिक, आर्थिक व्यवसायिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना चाहिए।

4. शिक्षण विधि

डॉ0 ए0 पी0 जी0 जे0 अब्दुल कलाम सलाह देते हैं कि कक्षा में एक षिक्षक को कम से कम 20 मिनट प्रष्न पूछने पर खर्च करना चाहिए। प्रष्नों के माध्यम से बच्चों में स्पष्ट सोच उत्पन्न होती है। डॉ0 कलाम कहते हैं कि षिक्षकों द्वारा ऐसे प्रष्न पूछे जाने चाहिए जो चुनौतीपूर्ण हों और छात्र सोचने एवं उत्तर देने के लिए अनुकरण कर सकें। डॉ0 कलाम छात्रों को खुले दिमाग से, वाद–विवाद एवं स्वतंत्रता से अपने विचारों को प्रस्तुत करने पर भी बल देते हैं। डॉ0 कलाम प्रयोग विधि का समर्थन षिक्षण में महत्वपूर्ण मानते हैं और कहते हैं कि प्रयोगों एवं सिद्वान्तों के सम्मिश्रण की आवष्यकता है।

5. शिक्षक

डॉ0 कलाम कहते है– "मैं मानता हूँ कि दुनिया में समाज के लिए शिक्षक से अधिक महत्वपूर्ण दायित्व किसी अन्य का नहीं है।" शिक्षकों का ध्येय बच्चों का चरित्र निर्माण करना तथा ऐसे मूल्यों को रोंपना होना चाहिए उनकी सीखने की क्षमता में वृद्धि हो। वे उनमें वह आत्मविश्वास पैदा करें कि छात्र कल्पनाशील एवं सृजनशील बन सकें। शिक्षक देश की रीढ़ होते हैं। वे ऐसे स्तंभ होते हैं जिनके बल पर सभी प्रकार की आकांक्षाएँ साकार होती हैं। एक शिक्षक में अपने पेशे के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए। उसे शिक्षण एवं बच्चों से प्रेम होना चाहिए।

6. विद्यार्थी

डॉ0 कलाम कहते हैं– "एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुण है– उसकी अपनी ईमानदारी और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता का भाव ये गुण आपको निस्संदेह एक आदर्श नागरिक बनने में मदद करेगे। मेरी कल्पना में आदर्श विद्यार्थी वह हैः जो सदाचारी है वह इस सिद्धान्त– समय को व्यर्थ नही गुजरने देगे– का पालन करता है, पढ़ाई में श्रेष्ठ प्रदर्शन करता है, समाज स्कूल, और परिवार का एक अच्छा सदस्य है। उसमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति तक अपने काम को निष्ठापूर्वक करने का धैर्य हो तथा वह शिक्षक, माता–पिता तथा बड़ो का सम्मान करता हो।''

7. अनुशासन

डॉ0 कलाम छात्रों में आत्म अनुशासन की भावना विकसित करना चाहते हैं। आत्म–अनुशासन हमें सांसारिक इच्छाओं द्वारा दूषित होने एवं भीषण आक्रमण से बचाव हेतु एक दुर्ग के रूप में कार्य करता है। अन्ततः आत्म–अनुशासित होने से बाध्य वातावरण का दुष्प्रभाव असफल रहता है।अनुशासन का अर्थ होता है कि हम सभी को दिन–प्रतिदिन जीने के साथ–साथ ईमानदारी, वफादारी और धैर्यपूर्णता के मूल्यों का अनुकरण करना चाहिए। हमें सकारात्मक सोच एकत्र करनी चाहिए कि हम देश के प्रति क्या कर रहे हैं और इसके साथ–साथ ही हमें अपने स्वयं के लिए भी लाभ प्राप्त होंगे।

8. विश्वविद्यालयी शिक्षा

डॉ0 कलाम कहते हैं कि कॉलेज में प्रचलित कला, विज्ञान और वाणिज्य के पाठ्यक्रमों में उद्योग सम्बन्धी विषयों और व्यवसायिक क्षेत्रों को जोड़ा जाना चाहिए। शिक्षा संस्थानों को छात्रों की मदद करनी चाहिए ताकि वे समझ सकें कि शिक्षा कैसे प्रत्यक्ष रूप से उनके व अन्य लोगों के लिए कल्याणकारी हो सकती है। हमारे स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण को प्रमुखता दी जानी चाहिए।

9. स्त्री शिक्षा

डॉ0 कलाम भी स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक हैं। उन्होंने राष्ट्र एवं समाज के विकास एवं उत्थान के लिए स्त्रियों को शिक्षित होना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण बताया है। वे कहते हैं कि किसी बालक के विकास मे तीन व्यक्ति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं –माता, पिता, और प्राथमिक शिक्षक। अतः बालक के विकास मे माँ का शिक्षित होना अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण होता है क्योकि माँ ही बालक की प्रथम शिक्षक होती है।

सन्दर्भ –

1. अब्दुल कलाम, ए.पी.जे. एवं महाप्रज्ञ, आचार्य, सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र' प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।
2. अब्दुल कलाम, ए.पी.जे. एवं राजन, वाई सुन्दर, भारत 2020 नव निर्माण की रूपरेखा' राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली
3. अब्दुल कलाम, ए.पी. जे., अदम्य साहस' राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006
4. अब्दुल कलाम, ए.पी.जे. एवं राजन, वाई सुन्दर, महाशक्ति भारत' प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली
5. अब्दुल कलाम, ए.पी.जे., हम होंगे कामयाब' प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली